

युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के 51वीं एवं राष्ट्रसंत महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के छठवीं पुण्यतिथि

के उपलक्ष्य में आयोजित

प्रेस विज्ञप्ति

गोरखपुर 31 अगस्त, 2020। युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के 51वीं एवं राष्ट्रसंत महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के 6वीं पुण्यतिथि के अवसर पर आज प्रथम दिन श्रीराम जन्म भूमि मन्दिर का शुभारम्भ भारत में एक नये युग का आरम्भ विषय पर अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में गोरक्षपीठाधीश्वर परमपूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने कहा कि गोरक्षपीठ का श्रीराम जन्म भूमि आन्दोलन से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। श्रीराम जन्म भूमि पर भव्य मन्दिर निर्माण से सम्पूर्ण भारतवर्ष गौरवान्वित हुआ है। श्रीराम जन्म भूमि पर मन्दिर निर्माण एक नये युग का शुभारम्भ है। कोई भी भारतीय ऐसा नहीं होगा जो भगवान श्रीराम के दिव्य आदर्शों से प्रभावित न हो, भले ही उसकी शिक्षा क्यों न विकृत शिक्षा प्रणाली में हुई हो। सन् 1528ई0 से लेकर सन् 2020ई0 तक प्रत्येक काल खण्ड में चाहे सरकार किसी की और कैसी भी क्यों न रही हो समाज निरन्तर श्रीराम जन्म भूमि के लिए संघर्ष करता रहा है। लाखों श्रीराम भक्तों के बलिदान और भारत की शाश्वत संत परम्परा के नेतृत्व के बाद आज अयोध्या में श्रीराम जन्म भूमि पर मन्दिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

उन्होंने कहा कि सर्वोच्च न्यायालय सर्वसम्मति से अयोध्या में श्रीराम जन्म भूमि पर मन्दिर निर्माण का निर्णय और उसके पश्चात् आम जन का उस निर्णय के प्रति सहर्ष सहमति भारतीय लोक तंत्र के शाश्वत मूल्यों व आदर्शों का प्रत्यक्ष उदाहरण है। हम अपनी शाश्वत परम्परा और पूर्वजों के प्रति सम्मान से ही भारत देश का गौरवशाली वर्तमान और उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर सकते हैं। सकारात्मक सोच जो लोक कल्याण के मार्ग से सबका साथ, सबका विकास के मूल मंत्र पर आधारित है, वह भारत की समृद्ध ज्ञान परम्परा का ही पर्याय है। भारत की यशस्वी परम्परा में स्वार्थ नहीं परमार्थ का भाव है। मई 2014 को भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत में शासन सत्ता की स्थापना राम राज्य की स्थापना ही तो है। राम का कार्य लोक कल्याण का ही कार्य है। इस दृष्टि से श्रीराम जन्म भूमि पर श्रीराम मन्दिर का निर्माण लोक मंगल और लोक कल्याण का सर्वोत्कृष्ट कार्य कह सकते हैं। वर्तमान सरकार द्वारा विभिन्न लोक कल्याणकारी कार्य जिसमें वंचितों, असहायों, गरीबों के जीवन में खुशहाली ले आना उसी कड़ी के रूप में देखा जा सकता है। वास्तव में वर्तमान सरकार के लोक कल्याणकारी कार्य जिसकी सर्वाधिक प्रतिस्थापना श्रीराम जन्म भूमि पर मन्दिर निर्माण से है, यह मात्र एक मन्दिर निर्माण का कार्य नहीं है। वरन् भारत की अपनी संस्कृति व अपनी परम्परा तथा यशस्वी पूर्वजों के प्रति सम्मान भाव की परिणति है।

उन्होंने कहा कि गोरक्षपीठ के पूर्व महन्तद्वय युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं राष्ट्रसंत महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के संकल्पो की सिद्धि भी मन्दिर शुभारम्भ के साथ हुई। जो भारत में राम राज्य की स्थापना के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित किये थे।

संगोष्ठी के मुख्य वक्ता महात्मां गांधी अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय वर्धा, महाराष्ट्र के कुलपति प्रो० रजनीश शुक्ल ने कहा कि विश्व में वास्तविक कलिकाल का उदय तब हुआ जब इस देश में जन-जन के आराध्य भगवान श्रीराम का आवास तोड़ा गया। भगवान श्रीराम का मन्दिर तोड़ा जाना तथा भारत के लोगों को भारतीयता से षडयंत्र पूर्वक विमुख करने हेतु जो कुतसित प्रयास हुआ वह अत्यन्त निन्दनीय है।

उन्होंने कहा कि भारत की भारतीयता को नष्ट भ्रष्ट करने, रामजन्म भूमि पर अपलाप करके राम विहिन भारत बनाने का जो षडयंत्र रचा गया, उसके फलस्वरूप भारत सचमुच अपनी भारतीय संस्कृति व राम के आदर्शों को भूलकर राजा विहिन प्रजा की तरह दिशा विहिन हो गया था। यह 2020 का वर्ष उस युग के समाप्ति का वर्ष है। 492 वर्ष के लंबे वनवास के बाद अयोध्या में विवाद मुक्त और शांति युक्त श्रीराम मन्दिर के निर्माण की स्थापना के कारण पुनः सम्पूर्ण भारत के साथ-साथ पूरे विश्व को शांति का मार्ग दिखाने का वर्ष है। प्रो० शुक्ल ने कहा कि जो राम साक्षात् न्याय, करुणा धर्म तथा शांति के शाश्वत विग्रह स्वरूप हैं। उन राम के मन्दिर का शुभारम्भ भी सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के उपरान्त समरसता व शांति के साथ होता है। उन्होंने कहा कि निश्चित रूप से सर्वेश्वर श्रीराम की इच्छा ही है कि जिस समय भव्य राम मन्दिर के निर्माण के लिए सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय आता है उस समय उत्तर प्रदेश का नेतृत्व उसी गोरक्षपीठ को प्राप्त है जो रामलला के प्राकट्य से लेकर जन्म भूमि मुक्ति आन्दोलन तक निरन्तर पूरे सनातन हिन्दू समाज का नेतृत्व किया।

विशिष्ट वक्ता **भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के निदेशक (शोध एवं प्रशासन) डॉ० ओम जी उपाध्याय** ने कहा कि भगवान श्रीराम और भारत एक दूसरे के पर्याय हैं। श्रीराम की चेतना ही भारत की चेतना है। श्रीराम के आदर्श ही भारत के आदर्श हैं। श्रीराम का चरित्र ही सम्पूर्ण भारत का चरित्र है। इसलिए निश्चित ही श्रीराम मन्दिर के निर्माण से भारत के नये युग आ आरम्भ है।

उन्होंने कहा कि 5 अगस्त, 2020 को आदरणीय प्रधानमंत्री जी ने जब श्रीराम के भव्य मन्दिर का शिलान्यास किया तो भारत के राजनीति व चरित्र की नई परिभाषा लिखी गई। कहने के लिए भारत धर्म निरपेक्ष था किन्तु भारत की राजनीति केवल तुष्टीकरण पर ही आधारित रही। अब भारत नकली धर्म निरपेक्षता से मुक्त हो गया।

मुख्य अतिथि **अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु स्वामी राघवाचार्य जी महाराज** ने कहा कि श्रीराम मन्दिर निर्माण का शुभारम्भ निश्चित ही नये युग का आरम्भ है। आजादी के बाद से हम सिर्फ पाश्चात्य संस्कृति का अनुसरण व अनुकरण करने में ही अपनी भारतीय संस्कृति को भूलते जा रहे थे। भगवान श्रीराम भारत के प्रतीक व पहचान हैं।

उन्होंने कहा कि हमारी भारतीय संस्कृति राममय होकर ही उनके आदर्शों पर चलकर सम्पूर्ण विश्व के कल्याण की बात करती है। निश्चित ही श्रीराम मन्दिर निर्माण से भारतीय संस्कृति में उनके आदर्शों की स्थापना हो सकेगी।

कार्यक्रम के प्रस्ताविकी में **पूर्व कुलपति एवं महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो० उदय प्रताप सिंह** जी ने कहा कि पूज्य गोरक्षपीठ के संतों द्वारा एक बहुत लंबे संघर्ष के बाद अयोध्या में भगवान श्रीराम के मन्दिर की स्थापना निश्चित ही भारतीय संस्कृति में नये युग का सूत्रपात करेगी।

कार्यक्रम में वैदिक मंगलाचरण संस्कृति विद्यापीठ के प्राध्यापक डॉ० रंगनाथ त्रिपाठी, दिग्विजयनाथ स्तोत्र पाठ डॉ० अभिषेक पाण्डेय गोरक्षाष्टक पाठ प्रांजल त्रिपाठी अवेद्यनाथ स्त्रोत पाठ डॉ० प्रांगेश कुमार मिश्र ने किया।

कार्यक्रम का संचालन डॉ० श्रीभगवान सिंह जी ने किया।